Internation
al Scholars
Journals

Global Journal of Sociology and Anthropology ISSN 2756-3456 Vol. 13 (1), pp. 001-005, November, 2024. Available online at www.internationalscholarsjournals.org © International Scholars Journals

Full Length Research Paper

पलामू जिले में नागर विकास और समाज-स्थानिक संबंधों की गहन जांच

बसंत कुमार सिंह[1], डॉ. राम सनेही पाल[2]

शोधार्थी, भूगोल विभाग, श्री सत्यसाई प्रौद्योगिकी और चिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय, सीहोर मध्य प्रदेश[1]

पर्यवेक्षक, भूगोल विभाग, स्वामी विवेकानंद विश्वविद्यालय, सागर, मध्य प्रदेश[2]

Author(s) retain the copyright of this article

Accepted 15th Oct, 2024

सार

पलामू जिला झारखंड राज्य का एक महत्वपूर्ण प्रशासनिक इकाई है जो नागर विकास और सामाजिक-स्थानिक संबंधों के विविध पहलुओं को प्रदर्शित करता है। प्रस्तुत शोध पत्र पलामू जिले में शहरीकरण, जनसांख्यिकीय परिवर्तन, सामाजिक-आर्थिक विकास और स्थानिक वितरण के बीच संबंधों की व्यापक जांच प्रस्तुत करता है। अध्ययन का मुख्य उद्देश्य जिले में नागरिक विकास की प्रक्रिया और सामाजिक-स्थानिक संरचनाओं के मध्य परस्पर संबंधों को समझना है। वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक शोध पद्धति का उपयोग करते हुए 2011 की जनगणना और 2023 तक के द्वितीयक आंकड़ों का विश्लेषण किया गया। परिणाम दर्शाते हैं कि पलामू में शहरीकरण दर 11.65% है जो राष्ट्रीय औसत से निम्न है। ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में साक्षरता, जनसंख्या घनत्व, और बुनियादी सुविधाओं में महत्वपूर्ण असमानताएं विद्यमान हैं। अध्ययन यह निष्कर्ष प्रस्तुत करता है कि संतुलित नागर विकास के लिए सामाजिक-स्थानिक योजना की आवश्यकता है। यह शोध नीति निर्माताओं और प्रशासकों के लिए महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि प्रदान करता है।

मुख्य शब्द: *पलामू जिला, नागर विकास, सामाजिक-स्थानिक संबंध, शहरीकरण, जनसांख्यिकीय परिवर्तन*

1. प्रस्तावना

भारत में तीव्र नागरिकीकरण और शहरीकरण की प्रक्रिया ने विभिन्न जिलों के सामाजिक-स्थानिक ढांचे को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित किया है। पलामू जिला झारखंड राज्य का एक ऐसा जिला है जो विविध सामाजिक-आर्थिक और भौगोलिक विशेषताओं से युक्त है। यह जिला 4,393 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्रफल में फैला हुआ है और इसकी भौगोलिक स्थिति 23°92' उत्तरी अक्षांश और 84°29' पूर्वी देशांतर पर है। पलामू का प्रशासनिक मुख्यालय डाल्टनगंज शहर में स्थित है। 2011 की जनगणना के अनुसार, जिले की कुल जनसंख्या 19,39,869 है, जिसमें से 88.35% ग्रामीण क्षेत्रों में और मात्र 11.65% शहरी क्षेत्रों में निवास करते हैं। नागर विकास की दृष्टि से पलामू जिला अभी भी पिछड़े जिलों की श्रेणी में आता है। 2006 में पंचायती राज मंत्रालय ने पलामू को देश के 250 सबसे पिछड़े जिलों में से एक घोषित किया था। जिले में शहरीकरण की निम्न दर, अपर्याप्त बुनियादी ढांचा, शैक्षिक और स्वास्थ्य सुविधाओं की कमी, और सामाजिक-आर्थिक असमानताएं प्रमुख चुनौतियां हैं। साथ ही, जिले में अनुसूचित जाति (27.65%) और अनुसूचित जनजाति (9.34%) की महत्वपूर्ण जनसंख्या निवास करती है, जो सामाजिक-स्थानिक संरचना को और अधिक जटिल बनाती है।

सामाजिक-स्थानिक संबंध शहरीकरण और नागर विकास के महत्वपूर्ण आयाम हैं जो यह निर्धारित करते हैं कि विभिन्न सामाजिक समूह कैसे और कहां निवास करते हैं, और उन्हें किस प्रकार की सुविधाएं उपलब्ध हैं। पलामू जिले में ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच साक्षरता दर, आर्थिक अवसरों, और बुनियादी सुविधाओं में व्यापक अंतर है। शहरी क्षेत्रों में साक्षरता दर 80.54% है जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में यह केवल 61.31% है। यह असमानता सामाजिक-स्थानिक विभाजन को स्पष्ट करती है। प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य पलामू जिले में नागर विकास की वर्तमान स्थिति का आकलन करना और सामाजिक-स्थानिक संबंधों के विविध पहलुओं को समझना है। यह अध्ययन जनसांख्यिकीय आंकड़ों, शहरीकरण के पैटर्न, शैक्षिक और आर्थिक संकेतकों का विश्लेषण करके जिले के विकास में विद्यमान चुनौतियों और अवसरों की पहचान करता है।

2. साहित्य समीक्षा

नागर विकास और सामाजिक-स्थानिक संबंधों पर व्यापक साहित्य उपलब्ध है जो भारतीय शहरीकरण की जटिलताओं को समझने में सहायक है। कुमार और शर्मा (2018) ने अपने अध्ययन में भारतीय शहरों में सामाजिक-आर्थिक आधार पर स्थानिक पृथक्करण की समस्या को उजागर किया है। उनके अनुसार, भारतीय शहरों में मध्यम और निम्न आय वर्ग के लोगों के बीच स्थानिक अलगाव बढ़ रहा है, जो गेटेड कम्युनिटी और मलिन बस्तियों के रूप में प्रकट होता है। यह पैटर्न पलामू जैसे उभरते शहरी केंद्रों में भी देखा जा सकता है। मिश्रा (2020) ने झारखंड राज्य में शहरीकरण की प्रक्रिया पर शोध किया और पाया कि राज्य में शहरीकरण की दर राष्ट्रीय औसत से कम है। झारखंड के अधिकांश जिलों में औद्योगिकरण की कमी के कारण शहरीकरण धीमी गति से हो रहा है। पलामू जिला भी इस प्रवृत्ति का अपवाद नहीं है, जहां कृषि आधारित अर्थव्यवस्था प्रमुख है और औद्योगिक गतिविधियां सीमित हैं।

सिंह और वर्मा (2021) ने सामाजिक-स्थानिक संबंधों के संदर्भ में ग्रामीण-शहरी असमानताओं का विश्लेषण किया। उन्होंने यह स्पष्ट किया कि भारत के पिछड़े जिलों में शैक्षिक, स्वास्थ्य, और बुनियादी सुविधाओं की कमी सामाजिक-स्थानिक विभाजन को गहरा करती है। पलामू जिले में भी ऐसी ही स्थिति देखी जाती है जहां ग्रामीण क्षेत्रों में महिला साक्षरता दर केवल 49.22% है। राव और पटेल (2019) ने अपने शोध में जनजातीय क्षेत्रों में नागर विकास की चुनौतियों पर ध्यान केंद्रित किया। उन्होंने पाया कि अनुसूचित जनजाति बहुल क्षेत्रों में पारंपरिक जीवन शैली, भूमि अधिकारों के मुद्दे, और सामाजिक-आर्थिक पिछड़ापन नागर विकास में बाधक हैं। पलामू में भी 9.34% जनजातीय जनसंख्या निवास करती है जो विकास की मुख्यधारा से दूर है।

गुप्ता (2022) ने भारतीय शहरों में मलिन बस्तियों की समस्या और सामाजिक-स्थानिक विभाजन पर व्यापक अध्ययन किया। उनके अनुसार, 2011 की जनगणना में भारत के 17% शहरी परिवार मलिन बस्तियों में निवास करते थे। ये बस्तियां सामाजिक-स्थानिक असमानता के प्रत्यक्ष प्रमाण हैं जहां बुनियादी सुविधाओं की गंभीर कमी है। चौधरी और मेहता (2020) ने ग्रामीण-शहरी प्रवास और इसके सामाजिक-स्थानिक प्रभावों का अध्ययन किया। उन्होंने बताया कि आर्थिक अवसरों की तलाश में ग्रामीण युवा शहरों की ओर पलायन करते हैं, जो ग्रामीण क्षेत्रों में श्रम शक्ति की कमी और शहरी क्षेत्रों में जनसंख्या दबाव दोनों को जन्म देता है। पांडेय (2021) ने झारखंड के पिछड़े जिलों में विकास योजनाओं के कार्यान्वयन पर शोध किया। उन्होंने पाया कि सरकारी योजनाओं के बावजूद इन जिलों में विकास की गति धीमी है। प्रशासनिक कमजोरी, भ्रष्टाचार, और स्थानीय भागीदारी की कमी प्रमुख कारण हैं।

3. शोध के उद्देश्य

1. जिले में शहरीकरण की दर, शहरी बुनियादी ढांचे की स्थिति, और नगर नियोजन की प्रक्रियाओं का विश्लेषण करना।
2. ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में जनसंख्या वितरण, सामाजिक संरचना, और स्थानिक असमानताओं का अध्ययन करना।
3. साक्षरता दर, लिंग अनुपात, जनसंख्या घनत्व, और आर्थिक गतिविधियों में ग्रामीण-शहरी अंतर को समझना।
4. अध्ययन के निष्कर्षों के आधार पर नीतिगत सिफारिशें और सामाजिक-स्थानिक योजना के लिए दिशा-निर्देश प्रदान करना।

4. शोध पद्धति

प्रस्तुत शोध एक वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक अध्ययन है जो मुख्य रूप से द्वितीयक आंकड़ों पर आधारित है। शोध में पलामू जिले के नागर विकास और सामाजिक-स्थानिक संबंधों को समझने के लिए मिश्रित शोध डिजाइन का उपयोग किया गया है। अध्ययन का नमूना पूरा पलामू जिला है जिसमें 20 विकासखंड, 9 शहर, और 1,870 गांव शामिल हैं। आंकड़ों का संग्रहण भारत की जनगणना 2011, जिला सांख्यिकी कार्यालय पलामू, झारखंड सरकार के विभिन्न विभागों, और राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केंद्र के प्रकाशनों से किया गया है। शोध में 2023 तक के नवीनतम उपलब्ध आंकड़ों का उपयोग किया गया है। विश्लेषण की तकनीक में सांख्यिकीय विधियां जैसे प्रतिशत, औसत, अनुपात, और तुलनात्मक विश्लेषण शामिल हैं। आंकड़ों को तालिकाओं के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है और प्रत्येक तालिका का विस्तृत सांख्यिकीय विवरण दिया गया है। शोध की वैधता सुनिश्चित करने के लिए केवल सरकारी और प्रामाणिक स्रोतों से प्राप्त आंकड़ों का उपयोग किया गया है।

5. परिणाम और विश्लेषण

तालिका 1: पलामू जिले की जनसांख्यिकीय विशेषताएं (2011)

संकेतक	कुल	पुरुष	महिला	ग्रामीण	शहरी
कुल जनसंख्या	19,39,869	10,06,302	9,33,567	17,13,866	2,26,003
लिंग अनुपात (प्रति 1000 पुरुष)	928	-	-	931	903
साक्षरता दर (%)	63.63	74.30	52.09	61.31	80.54
बाल जनसंख्या (0-6 वर्ष)	3,29,728	1,69,543	1,60,185	2,98,338	31,390

जनसंख्या घनत्व (प्रति वर्ग कि.मी.)	442	-	-	-	-

पलामू जिले की कुल जनसंख्या 2011 की जनगणना के अनुसार 19,39,869 है जिसमें 51.87% पुरुष और 48.13% महिलाएं हैं। जिले का लिंग अनुपात 928 है जो राष्ट्रीय औसत 940 से कम है। ग्रामीण क्षेत्रों में लिंग अनुपात 931 है जबकि शहरी क्षेत्रों में यह घटकर 903 रह जाता है, जो शहरी क्षेत्रों में लिंग असंतुलन को दर्शाता है। जिले की साक्षरता दर 63.63% है जो राष्ट्रीय औसत 74.04% से काफी कम है। पुरुष और महिला साक्षरता में 22.21% का अंतर है जो लैंगिक असमानता को प्रदर्शित करता है। कुल जनसंख्या का 17% भाग 0-6 वर्ष के बच्चे हैं। जनसंख्या घनत्व 442 प्रति वर्ग किलोमीटर है।

तालिका 2: ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में साक्षरता विवरण

क्षेत्र	कुल साक्षर	पुरुष साक्षर	महिला साक्षर	साक्षरता दर (%)	पुरुष साक्षरता (%)	महिला साक्षरता (%)
ग्रामीण	8,67,814	5,32,569	3,35,245	61.31	72.52	49.22
शहरी	1,56,749	89,137	67,612	80.54	87.07	73.30
कुल	10,24,563	6,21,706	4,02,857	63.63	74.30	52.09

पलामू जिले में ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच साक्षरता दर में महत्वपूर्ण अंतर है। शहरी क्षेत्रों में साक्षरता दर 80.54% है जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में यह केवल 61.31% है, जो 19.23% का अंतर दर्शाता है। यह अंतर सामाजिक-स्थानिक असमानता का प्रमुख संकेतक है। शहरी क्षेत्रों में पुरुष साक्षरता 87.07% और महिला साक्षरता 73.30% है, जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में ये आंकड़े क्रमशः 72.52% और 49.22% हैं। ग्रामीण महिला साक्षरता विशेष रूप से चिंताजनक है जो राष्ट्रीय महिला साक्षरता दर 65.46% से बहुत कम है। कुल 10,24,563 साक्षर व्यक्तियों में से 84.69% ग्रामीण क्षेत्रों में और केवल 15.31% शहरी क्षेत्रों में निवास करते हैं।

तालिका 3: सामाजिक समूहों का वितरण

सामाजिक समूह	कुल जनसंख्या	पुरुष	महिला	ग्रामीण	शहरी	कुल जनसंख्या का %
अनुसूचित जाति (SC)	5,36,382	2,77,119	2,59,263	5,03,315	33,067	27.65
अनुसूचित जनजाति (ST)	1,81,208	92,577	88,631	1,77,852	3,356	9.34
सामान्य	12,22,279	6,36,606	5,85,673	10,32,699	1,89,580	63.01

पलामू जिले में सामाजिक संरचना विविधतापूर्ण है। अनुसूचित जाति की जनसंख्या 5,36,382 है जो कुल जनसंख्या का 27.65% है। अनुसूचित जनजाति की जनसंख्या 1,81,208 है जो कुल का 9.34% है। दोनों समूहों को मिलाकर 36.99% जनसंख्या सामाजिक रूप से वंचित वर्गों से संबंधित है। विशेष रूप से ध्यान देने योग्य बात यह है कि अनुसूचित जाति और जनजाति की 93.83% और 98.15% जनसंख्या क्रमशः ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है। यह स्थानिक पृथक्करण को दर्शाता है जहां ये समूह मुख्य रूप से ग्रामीण क्षेत्रों तक सीमित हैं और शहरी विकास से वंचित रहते हैं। अनुसूचित जाति में लिंग अनुपात 936 और अनुसूचित जनजाति में 957 है।

तालिका 4: आर्थिक गतिविधियों में संलग्न जनसंख्या

कार्य श्रेणी	कुल कामगार	पुरुष	महिला	मुख्य कार्य (%)	सीमांत कार्य (%)
कुल कामगार	7,13,175	4,73,042	2,40,133	39.8	60.2
कृषक (खेती करने वाले)	68,895	55,028	13,867	-	-
कृषि मजदूर	95,734	69,692	26,042	-	-
घरेलू उद्योग कामगार	12,486	6,239	6,247	-	-
अन्य कामगार	5,36,060	3,42,083	1,93,977	-	-

पलामू जिले में कुल 7,13,175 कामगार हैं जो कुल जनसंख्या का 36.75% है। इनमें से 66.33% पुरुष और 33.67% महिलाएं हैं। मुख्य कामगार (6 महीने से अधिक रोजगार) केवल 39.8% हैं जबकि 60.2% सीमांत कामगार (6 महीने से कम रोजगार) हैं, जो आर्थिक असुरक्षा को दर्शाता है। कृषि क्षेत्र में 68,895 कृषक और 95,734 कृषि मजदूर हैं, जो मिलकर कुल कामगारों का 23.08% हैं। कृषि मजदूरों में महिलाओं का प्रतिशत केवल 27.21% है। घरेलू उद्योग में संलग्न कामगार केवल 1.75% हैं। अन्य कामगारों की संख्या 5,36,060 है जो सेवा, व्यापार, और निर्माण क्षेत्रों में कार्यरत हैं।

तालिका 5: शहरी बुनियादी ढांचा और सुविधाएं

सुविधा/संकेतक	उपलब्धता	विवरण
नगर निकाय	9 शहर	नगर परिषद और नगर पंचायत
विकासखंड	20	प्रशासनिक इकाइयां
प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र	43	ग्रामीण और शहरी
शैक्षणिक संस्थान (उच्च शिक्षा)	8	कॉलेज और विश्वविद्यालय
बैंक शाखाएं	127	वाणिज्यिक और ग्रामीण बैंक
पंचायतें	278	ग्राम स्तरीय स्वशासन

पलामू जिले में शहरी बुनियादी ढांचा सीमित है। जिले में कुल 9 शहरी निकाय हैं जो 2,26,003 शहरी जनसंख्या की सेवा करते हैं, जिसका अर्थ है प्रत्येक शहरी निकाय औसतन 25,111 लोगों को सेवाएं प्रदान करता है। 20 विकासखंडों के माध्यम से प्रशासनिक सेवाएं प्रदान की जाती हैं। स्वास्थ्य सुविधाओं की दृष्टि से, 43 प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र हैं जो औसतन 45,113 लोगों को सेवा प्रदान करते हैं। यह राष्ट्रीय मानक से काफी अधिक है। उच्च शिक्षा के लिए केवल 8 संस्थान उपलब्ध हैं। बैंकिंग सुविधाओं के संदर्भ में, 127 बैंक शाखाएं हैं जो औसतन 15,274 लोगों को सेवा देती हैं। 278 ग्राम पंचायतें स्थानीय स्वशासन और विकास में सहायक हैं।

तालिका 6: पलामू और झारखंड/राष्ट्रीय औसत की तुलना

संकेतक	पलामू जिला	झारखंड राज्य	राष्ट्रीय औसत
शहरीकरण दर (%)	11.65	24.05	31.16
कुल साक्षरता दर (%)	63.63	67.63	74.04
पुरुष साक्षरता (%)	74.30	78.45	82.14
महिला साक्षरता (%)	52.09	56.21	65.46
लिंग अनुपात	928	948	940
बाल लिंग अनुपात	945	948	919

तुलनात्मक विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि पलामू जिला अधिकांश सामाजिक-आर्थिक संकेतकों में राज्य और राष्ट्रीय औसत से पिछड़ा है। शहरीकरण दर 11.65% है जो झारखंड (24.05%) और राष्ट्रीय औसत (31.16%) से बहुत कम है। साक्षरता दर में भी महत्वपूर्ण अंतर है - पलामू की 63.63% साक्षरता दर राष्ट्रीय औसत से 10.41% कम है। महिला साक्षरता में अंतर और भी अधिक गंभीर है - राष्ट्रीय औसत से 13.37% कम। लिंग अनुपात में पलामू (928) झारखंड (948) और राष्ट्रीय औसत (940) दोनों से पीछे है। हालांकि, बाल लिंग अनुपात (945) राष्ट्रीय औसत (919) से बेहतर है, जो एक सकारात्मक संकेत है।

6. परिचर्चा

पलामू जिले में नागर विकास और सामाजिक-स्थानिक संबंधों का विश्लेषण कई महत्वपूर्ण निष्कर्षों की ओर इशारा करता है। प्रथम, जिले में शहरीकरण की दर अत्यंत निम्न है, जो राष्ट्रीय औसत से लगभग तीन गुना कम है। यह निम्न शहरीकरण दर कई कारकों का परिणाम है जैसे औद्योगिक विकास की कमी, रोजगार के सीमित अवसर, और बुनियादी ढांचे की अपर्याप्तता। कुमार और शर्मा (2018) के अध्ययन के अनुसार, भारतीय शहरों में सामाजिक-आर्थिक आधार पर स्थानिक पृथक्करण बढ़ रहा है। पलामू में भी यही प्रवृत्ति देखी जाती है जहां शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के बीच साक्षरता, आय, और बुनियादी सुविधाओं में व्यापक अंतर है। द्वितीय, ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच साक्षरता दर में 19.23% का अंतर सामाजिक-स्थानिक विभाजन का स्पष्ट प्रमाण है। सिंह और वर्मा (2021) ने भी अपने शोध में ऐसी ही असमानताओं को चिन्हित किया है। विशेष रूप से ग्रामीण महिला साक्षरता (49.22%) अत्यंत निम्न है, जो लैंगिक और स्थानिक दोहरी असमानता को दर्शाती है। यह स्थिति शैक्षणिक संस्थानों की कमी, सामाजिक-सांस्कृतिक बाधाओं, और आर्थिक संसाधनों की कमी के कारण है।

तृतीय, अनुसूचित जाति और जनजाति की 36.99% जनसंख्या का मुख्य रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में संकेंद्रण सामाजिक-स्थानिक असमानता का एक और आयाम प्रस्तुत करता है। राव और पटेल (2019) के अनुसार, जनजातीय समुदायों का पारंपरिक जीवन शैली में रहना और मुख्यधारा के विकास से दूरी उनके पिछड़ेपन का प्रमुख कारण है। पलामू में भी इन समुदायों की शहरी क्षेत्रों में न्यूनतम उपस्थिति यह दर्शाती है कि नागर विकास में उनकी भागीदारी सीमित है। चतुर्थ, आर्थिक गतिविधियों का विश्लेषण यह बताता है कि 60.2% कामगार सीमांत श्रेणी में हैं, जो आर्थिक असुरक्षा और अस्थिरता को दर्शाता है। चौधरी और मेहता (2020) ने भी ऐसी ही परिस्थितियों को ग्रामीण-शहरी प्रवास का प्रमुख कारण बताया है। पलामू में कृषि क्षेत्र का प्रभुत्व है परंतु कृषि की उत्पादकता निम्न है, जो आर्थिक विकास में बाधक है। पंचम, शहरी बुनियादी ढांचे की अपर्याप्तता नागर विकास की प्रमुख चुनौती है। गुप्ता

(2022) के अनुसार, बुनियादी सुविधाओं की कमी शहरीकरण की गुणवत्ता को प्रभावित करती है। पलामू में स्वास्थ्य केंद्रों, शैक्षणिक संस्थानों, और अन्य सुविधाओं का अपर्याप्त होना जीवन की गुणवत्ता को नकारात्मक रूप से प्रभावित करता है। छठम, पांडेय (2021) के शोध के अनुरूप, पलामू में भी विकास योजनाओं के कार्यान्वयन में चुनौतियां हैं। यद्यपि जिला पिछड़े क्षेत्र अनुदान कोष कार्यक्रम (BRGF) के अंतर्गत सहायता प्राप्त करता है, फिर भी विकास की गति धीमी है।

7. निष्कर्ष

पलामू जिले में नागर विकास और सामाजिक-स्थानिक संबंधों का यह अध्ययन कई महत्वपूर्ण निष्कर्ष प्रस्तुत करता है। जिला निम्न शहरीकरण दर, शैक्षिक और आर्थिक पिछड़ेपन, और सामाजिक-स्थानिक असमानताओं से ग्रस्त है। ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच विकास के स्तर में महत्वपूर्ण अंतर है। अनुसूचित जाति और जनजाति समुदायों का मुख्यधारा के विकास से वंचित रहना चिंता का विषय है। संतुलित नागर विकास के लिए समावेशी योजना, बुनियादी ढांचे का सुदृढ़ीकरण, शैक्षिक और स्वास्थ्य सुविधाओं का विस्तार, और सामाजिक-स्थानिक असमानताओं को दूर करने के प्रयास आवश्यक हैं। जिले के सतत विकास के लिए ग्रामीण-शहरी संबंधों को मजबूत करना, स्थानीय भागीदारी को प्रोत्साहित करना, और वंचित समुदायों के सशक्तिकरण पर विशेष ध्यान देना होगा।

संदर्भ सूची

1. कुमार, आर., और शर्मा, पी. (2018). भारतीय शहरों में सामाजिक-स्थानिक पृथक्करण: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन. भारतीय भूगोल पत्रिका, 93(2), 145-162.
2. मिश्रा, एस. (2020). झारखंड में शहरीकरण की प्रक्रिया और चुनौतियां. झारखंड अध्ययन पत्रिका, 15(4), 78-95.
3. सिंह, वी., और वर्मा, आर. (2021). ग्रामीण-शहरी असमानताएं: भारतीय जिलों का तुलनात्मक अध्ययन. समाज और विकास, 28(3), 201-218.
4. राव, के., और पटेल, एस. (2019). जनजातीय क्षेत्रों में नागर विकास की समस्याएं. आदिवासी शोध पत्रिका, 12(1), 34-51.
5. गुप्ता, एम. (2022). भारतीय शहरों में मलिन बस्तियां और सामाजिक-स्थानिक विभाजन. शहरी अध्ययन जर्नल, 45(2), 112-129.
6. चौधरी, ए., और मेहता, डी. (2020). ग्रामीण-शहरी प्रवास और इसके सामाजिक प्रभाव. जनसंख्या अध्ययन, 35(4), 267-284.
7. पांडेय, आर. (2021). झारखंड के पिछड़े जिलों में विकास योजनाओं का कार्यान्वयन. विकास नीति अध्ययन, 19(3), 89-106.
8. भारत की जनगणना (2011). जिला जनगणना पुस्तिका - पलामू. भारत सरकार, गृह मंत्रालय.
9. झारखंड सरकार (2021). आर्थिक सर्वेक्षण 2020-21. वित्त विभाग, झारखंड सरकार.
10. राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केंद्र (2022). जिला प्रोफाइल - पलामू. झारखंड राज्य केंद्र.
11. योजना आयोग (2013). पिछड़े क्षेत्र अनुदान कोष कार्यक्रम: पलामू जिला. भारत सरकार.
12. शर्मा, एन. (2019). भारत में शहरीकरण के सामाजिक आयाम. सामाजिक विज्ञान अध्ययन, 42(1), 56-73.
13. त्रिपाठी, वी. (2020). नगर नियोजन और सामाजिक न्याय. भारतीय नगर शास्त्र पत्रिका, 37(2), 134-151.
14. वर्मा, ए. (2021). झारखंड में जनजातीय विकास: समस्याएं और समाधान. जनजातीय अध्ययन केंद्र, रांची.
15. द्विवेदी, पी. (2018). ग्रामीण विकास और सामाजिक परिवर्तन. ग्रामीण अध्ययन पत्रिका, 25(4), 178-195.
16. सक्सेना, आर. (2022). भारत में शिक्षा और सामाजिक गतिशीलता. शैक्षिक शोध जर्नल, 48(3), 223-240.
17. झा, एस. (2020). पिछड़े जिलों का समग्र विकास: एक रणनीति. योजना और विकास, 33(2), 98-115.
18. मल्होत्रा, के. (2019). शहरी बुनियादी ढांचा और जीवन गुणवत्ता. शहरी प्रबंधन अध्ययन, 29(1), 45-62.
19. सिन्हा, बी. (2021). झारखंड की सामाजिक-आर्थिक संरचना. झारखंड विकास अध्ययन, 16(3), 156-173.
20. रॉय, ए. (2020). भारत में लैंगिक असमानता और शिक्षा. महिला अध्ययन पत्रिका, 31(4), 267-284.